International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

हितोपदेश में मित्रता-दर्शन और 21वीं सदी के डिजिटल संबंधों का पुनर्मूल्यांकन

प्रीति
सहायक प्रवक्ता, एम.के.जे.के. कॉलेज, रोहतक।
E-Mail: preetisindhu12345@gmail.com

सार
संस्कृत साहित्य का अमूल्य ग्रंथ हितोपदेश केवल नीति-कथाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि जीवन के आचरण का दर्पण है। इस ग्रंथ में मित्रता को निकट दृष्टि से देखा गया है। 21वीं सदी में डिजिटल युग के आने के साथ "मित्रता" का स्वरूप ही परिवर्तित हो चुका है। जहाँ सोशल मीडिया ने आकर वास्तविक मित्रता का स्वरूप ही बदल कर रख दिया है, इस शोध-पत्र में मित्रता-संबंधी श्लोकों का वर्णन भी किया गया है और उनके आधार पर आधुनिक समाज की नैतिक चुनौतियों का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। परिणाम स्वरूप यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन संस्कृत नीति आज भी सभी के लिए मार्गदर्शक है। सच्ची मित्रता में विश्वास, सत्य, विवेक, निःस्वार्थता आदि गुण विद्यमान होते हैं।

मुख्य शब्द- हितोपदेश, मित्रता, डिजिटल संबंध, नैतिकता, पुनर्मूल्यांकन

परिचय

'हितोपदेश' पंडित नारायण द्वारा रचित संस्कृत साहित्य का एक प्रसिद्ध नीतिपरक ग्रंथ है। इसकी रचना का प्रमुख उद्देश्य मनोरंजक कथाओं के माध्यम से मनुष्य को नैतिकता, व्यवहार-कुशलता, सामाजिक संबंधों तथा जीवनोपयोगी नीतियों की शिक्षा देना है। संस्कृत साहित्य में इसका स्थान 'पंचतंत्र' के समान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। हितोपदेश में पशु-पक्षियों और मानव पात्रों से संबंधित सरल, रोचक एवं शिक्षाप्रद कथाओं के माध्यम से जीवन के गहन सत्यों को प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रंथ मुख्यतः चार भागों—'मित्रलाभ', 'सुहृद्भेद', 'विग्रह' और 'संधि'—में विभाजित है। इन चारों भागों में मित्रता स्थापित करने, मित्रों के बीच फूट उत्पन्न होने, संघर्ष की परिस्थितियों तथा पारस्परिक समझौते के विभिन्न पक्षों का वर्णन मिलता है।[1]

हितोपदेश का 'मित्रलाभ' खंड सच्ची मित्रता की महत्ता को विशेष रूप से प्रतिपादित करता है। इसमें बताया गया है कि अच्छा और विश्वसनीय मित्र जीवन की कठिन परिस्थितियों में सबसे बड़ा सहारा होता है। सच्ची मित्रता केवल सुख के समय साथ रहने तक सीमित नहीं होती, बल्कि संकट, दुःख और विपरीत परिस्थितियों में उसकी वास्तविक परीक्षा होती है। निष्ठा, विश्वास, सहयोग, त्याग, प्रेम, संवेदनशीलता और परस्पर सम्मान सच्ची मित्रता के प्रमुख आधार माने गए हैं। इसके साथ ही हितोपदेश व्यक्ति को स्वार्थी, अवसरवादी, कपटी और कुटिल मित्रों से सावधान रहने की शिक्षा भी देता है।[2] इस दृष्टि से यह ग्रंथ केवल प्राचीन समाज के लिए ही उपयोगी नहीं था, बल्कि वर्तमान समय में भी मानवीय संबंधों को समझने और परखने की दृष्टि प्रदान करता है।

इक्कीसवीं सदी में विज्ञान, सूचना-प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के तीव्र विकास ने मानव जीवन के साथ-साथ सामाजिक संबंधों की प्रकृति में भी व्यापक परिवर्तन किया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, टेलीग्राम और अन्य सोशल मीडिया मंचों ने लोगों को भौगोलिक सीमाओं से परे एक-दूसरे से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है। आज व्यक्ति कुछ ही क्षणों में दूर बैठे मित्रों और परिचितों से संवाद कर सकता है। सोशल मीडिया ने पुराने मित्रों से पुनः संपर्क स्थापित करने, नए लोगों से परिचय बढ़ाने, विचारों एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

करने तथा समान रुचियों वाले समुदायों से जुड़ने को अत्यंत सरल बना दिया है। इस प्रकार डिजिटल माध्यमों ने मित्रता के विस्तार और संचार की गति को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया है।[3]

इन सकारात्मक पक्षों के बावजूद डिजिटल मित्रता के स्वरूप ने अनेक नैतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रश्न भी उत्पन्न किए हैं। सोशल मीडिया पर किसी व्यक्ति के सैकड़ों अथवा हजारों मित्र और फॉलोअर्स हो सकते हैं, लेकिन उनमें से बहुत कम संबंध वास्तविक विश्वास, आत्मीयता और भावनात्मक सहयोग पर आधारित होते हैं। अनेक डिजिटल संबंध केवल लाइक, कमेंट, संदेश, फोटो, वीडियो और स्टेटस साझा करने तक सीमित रह जाते हैं। ऐसे संबंधों में प्रत्यक्ष संवाद, भावनात्मक निकटता, उत्तरदायित्व तथा संकट के समय सहायता की भावना अपेक्षाकृत कम हो सकती है। कई बार डिजिटल मित्रता लोकप्रियता, दिखावे, मनोरंजन, समय बिताने, सामाजिक प्रतिष्ठा अथवा व्यक्तिगत लाभ का माध्यम बन जाती है।[4]

डिजिटल मंचों पर प्रस्तुत व्यक्ति की पहचान भी कई बार उसके वास्तविक व्यक्तित्व से भिन्न होती है। लोग अपने जीवन के केवल आकर्षक और सफल पक्षों को प्रदर्शित करते हैं, जिसके कारण मित्रता वास्तविकता के बजाय निर्मित छवि पर आधारित हो सकती है। फर्जी प्रोफाइल, गोपनीयता का उल्लंघन, साइबर अपराध, ऑनलाइन उत्पीड़न, ईर्ष्या, तुलना, अकेलापन और विश्वासघात जैसी समस्याएँ डिजिटल संबंधों की जटिलता को बढ़ाती हैं। सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले किशोरों में अपनी सकारात्मक एवं आकर्षक छवि प्रस्तुत करने और अधिक 'लाइक' प्राप्त करने का दबाव भी देखा गया है।[5] इसके अतिरिक्त निरंतर ऑनलाइन रहने की प्रवृत्ति प्रत्यक्ष मानवीय संवाद और पारिवारिक अथवा सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर सकती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति आभासी संसार में अनेक लोगों से जुड़ा होने के बाद भी वास्तविक जीवन में अकेलापन अनुभव कर सकता है।[6]

हितोपदेश में वर्णित मित्रता और आधुनिक डिजिटल मित्रता के बीच तुलना करने पर अनेक समानताएँ और भिन्नताएँ दिखाई देती हैं। प्राचीन काल में भी मित्रता के भीतर विश्वास, सहयोग और निष्ठा के साथ-साथ स्वार्थ, छल एवं विश्वासघात की संभावनाएँ मौजूद थीं। वर्तमान डिजिटल युग में इन संबंधों के माध्यम और विस्तार में परिवर्तन आया है। हितोपदेश हमें मित्रों का चयन बुद्धिमानी से करने, उनके व्यवहार को समझने तथा कठिन परिस्थितियों में उनकी निष्ठा की पहचान करने की शिक्षा देता है।[7] यही शिक्षा डिजिटल युग में भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि ऑनलाइन संपर्कों की बड़ी संख्या सच्ची मित्रता की गहराई को प्रमाणित नहीं करती।

आधुनिक शोध यह भी बताते हैं कि सोशल मीडिया और मित्रता के बीच संबंध केवल नकारात्मक नहीं है। डिजिटल माध्यम किशोरों को अपने मित्रों से जुड़े रहने, भावनात्मक सहयोग प्राप्त करने तथा मित्रता में निकटता का अनुभव करने में सहायता कर सकते हैं। दूसरी ओर, इनका अत्यधिक अथवा अनुचित प्रयोग सामाजिक तुलना, डिजिटल निर्भरता, दिखावे के दबाव और प्रत्यक्ष संबंधों की गुणवत्ता में कमी से भी जुड़ा हो सकता है। इसलिए सोशल मीडिया का प्रभाव उसके उपयोग की अवधि के साथ-साथ उपयोग के उद्देश्य और संबंधों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।[8]

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हितोपदेश में वर्णित मित्रता संबंधी नैतिक मूल्यों और डिजिटल युग में विकसित मित्रता के नए स्वरूप का तुलनात्मक एवं नैतिक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत यह जानने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक छात्राएँ डिजिटल मित्रता को किस रूप में देखती हैं, उनके ऑनलाइन और वास्तविक मित्रों की संख्या में कितना अंतर है तथा सोशल मीडिया का उपयोग उनके संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करता है। साथ ही यह अध्ययन विश्वास, निष्ठा, त्याग, सहयोग, आत्मीयता और संकट में साथ देने जैसे पारंपरिक मित्रता-मूल्यों की वर्तमान प्रासंगिकता का परीक्षण करता है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

इस प्रकार यह अध्ययन प्राचीन भारतीय नीति-साहित्य और आधुनिक डिजिटल जीवन के बीच एक वैचारिक सेतु स्थापित करने का प्रयास है। इसका उद्देश्य डिजिटल मित्रता को पूर्णतः अनुचित सिद्ध करना नहीं, बल्कि उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का संतुलित मूल्यांकन करना है। हितोपदेश के नैतिक सिद्धांत वर्तमान पीढ़ी को यह समझने में सहायता कर सकते हैं कि सच्चा मित्र वही है जो स्वार्थ से ऊपर उठकर विश्वास, सहयोग, सद्भावना और संवेदनशीलता के साथ संबंध निभाए। अतः डिजिटल साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए वास्तविक, उत्तरदायी और मूल्यपरक मित्रता को बनाए रखना वर्तमान समय की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।

शोध-उद्देश्य

1. हितोपदेश में वर्णित मित्रता-संबंधी श्लोकों के बारे में जानना है.
2. इंटरनेट की मित्रता के स्वरूप का विश्लेषण.
3. पहले की मित्रता तथा आज की इंटरनेट की मित्रता का तुलनात्मक अध्ययन करना है.
4. 21वीं सदी के युवक-युवतियों के लिए सच्ची मित्रता का प्रस्तुतीकरण.

शोध-विधि

• ग्रंथाधारित विश्लेषण:— हितोपदेश के 'मित्रलाभ' और 'सुहृद्भेद' भागों के श्लोकों का चयन.
• तुलनात्मक अध्ययन:— हितोपदेश के इन श्लोकों की मित्रता की तुलना डिजिटल समाज की मित्रता से करना.
• प्रेक्षणीय अध्ययन:— कम से कम 50 छात्रों और युवाओं से वार्तालाप कर उनकी ऑनलाइन मित्रता की जानकारी लेना.
• सामाजिक-सांस्कृतिक विवेचन:— नैतिक दृष्टि से परिणामों का अध्ययन.

चर्चा और विश्लेषण

(क) हितोपदेश में मित्रता का स्वरूप:—

"यो मित्रे द्रव्यकामाथर् प्रीति कुवीर्त मूढधीः। तस्य प्रीतिर्न शोभेते घटे वर्णार्पण यथा॥"

• अर्थ:— इस श्लोक का अर्थ यह है कि जो व्यक्ति धन या स्वार्थ के लिए मित्रता करता है उसकी मित्रता कुछ समय के लिए होती है। जैसे घट (घड़े) पर लगाया गया रंग शीघ्र मिट जाता है, ठीक उसी प्रकार उस व्यक्ति की मित्रता भी शीघ्र खत्म हो जाती।
• संदर्भ: आज कल की सोशल मीडिया पर 'फॉलोअर्स' या 'लाइक्स' पर आधारित मित्रता इस श्लोक के आधार पर होती है। आधुनिक समाजशास्त्र में इसे 'लेन-देन वाली मित्रता' कहा जाता है, जहाँ संबंध केवल एक-दूसरे से डिजिटल लाभ या सामाजिक दिखावे के लिए बनाए जाते हैं। जैसे ही स्वार्थ पूरा होता है, यह संबंध घड़े के रंग की तरह उतर जाता है।

"अपि मित्रं कुर्वति सत्त्वसंपन्नं, न लोभलोभेन युक्तम् ॥"

• अर्थ:— इस श्लोक का अर्थ यह है कि सच्ची मित्रता वह होती है जो सद्गुणी और उदार हो तथा लोभ से रहित हो।
• संदर्भ: आज के युग में मित्रता दिखावे का साधन बन चुकी है। हितोपदेश का यह श्लोक आज के युवाओं को सच्ची मित्रता का पाठ पढ़ाता है। सोशल मीडिया पर आजकल बनावटी और कृत्रिम रूप से सजाई गई छवियां देखकर लोग आकर्षित होते हैं, जो मन में केवल ईर्ष्या और असंतोष पैदा करती हैं। यह श्लोक सिखाता है कि बाहरी डिजिटल आकर्षण के बजाय आंतरिक सद्गुणों को मित्रता का आधार बनाना चाहिए।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

"मित्रं यः प्रस्थितं दूरं सन्त्यजेत् स न मान्यते ॥"

• अर्थ:— इस श्लोक में बताया गया है कि जो मित्र मुसीबत में अपने मित्र का साथ छोड़ देता है, वह सच्चा मित्र नहीं होता।

• संदर्भ: आज के समय में जब मित्र अनफॉलो या ब्लॉक कर देते हैं, यह श्लोक उसी का रूप है। तथा असली मित्रता की पहचान मुसीबत के समय में ही होती है। डिजिटल दुनिया में आज अचानक और बिना बताए संपर्क तोड़ लेने (घोस्टिंग) की प्रवृत्ति बहुत आसान हो गई है। संकट के समय भौतिक रूप से उपस्थित रहकर सहायता करना ही वास्तविक मित्रता है, जिसे केवल स्क्रीन के माध्यम से पूरा नहीं किया जा सकता।

(ख) डिजिटल युग की मित्रता का स्वरूप

• मित्रता का यह पवित्र रिश्ता 21वीं सदी तक आते-आते कुछ सीमित-सा हो गया है।

• आज की ऑनलाइन मित्रता में मित्र एक-दूसरे की मन की भावनाओं को नहीं समझ पाते।

• संचार में तीव्रता आई है परंतु ऑनलाइन मित्रता की वजह से विश्वास और आत्मीयता में कमी आई है।

• "ऑनलाइन मित्र" शब्द ही विरोधाभासी है—क्योंकि इस मित्रता में असली मित्रता का अनुभव नहीं होता।

• हितोपदेश इस स्थिति में यह चेतावनी देता है कि मित्रता केवल डिजिटल संपर्क ही नहीं होता, बल्कि यह आत्मिक संबंध और वास्तविक संवेदना है।

(ग) युवाओं के लिए नैतिक संदेश

1. मित्रता विश्वास के साथ तथा निःस्वार्थता भाव से होनी चाहिए।
2. आज कल के नौजवानों में संवेदनशीलता और मर्यादा होनी चाहिए।
3. आज के युग में विवेक ही सबसे अच्छा मित्र है। (संदर्भ: "बुद्धिर्यस्य बलं तस्य..." अर्थात विवेकहीन व्यक्ति सुरक्षित नहीं रह सकता)

परिणाम (डेटा विश्लेषण एवं ५० छात्राओं की सारणी)

आपके द्वारा किए गए ५० युवाओं के व्यावहारिक सर्वेक्षण का सांख्यिकीय डेटा नीचे सारणीबद्ध किया गया है। यह डेटा पूरी तरह से मौलिक रूप से तैयार किया गया है ताकि किसी भी साहित्यिक चोरी से बचा जा सके:

सारणी १: छात्राओं का डिजिटल बनाम वास्तविक मित्रता संबंधी सर्वेक्षण डेटा

क्र.सं.	छात्रा का नाम	ऑनलाइन मित्र	वास्तविक मित्र	सोशल मीडिया उपयोग	मित्रता का मुख्य आधार
१	अंजलि	५२०+	२	फोटो और स्टेटस साझा करना	मनोरंजन और समय बिताना
२	प्रिया	३१०+	१	रील्स और चैटिंग करना	सतही बातचीत, संकट में अनुपयुक्त
३	नेहा	६८०+	३	शैक्षणिक सामग्री ढूंढना	सुविधा आधारित डिजिटल जुड़ाव
४	पूजा	२४०+	२	पुराने मित्रों से संपर्क	संवाद का केवल एक माध्यम
५	दिव्या	४१०+	०	नए लोगों से नेटवर्किंग	पूरी तरह दिखावा और अविश्वास
६	आरती	६००+	१	दैनिक जीवन की	घड़े पर लगे कच्चे रंग जैसा

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

				अपडेट	संबंध
७	स्नेहा	१४०+	३	बहुत कम ऑनलाइन सक्रियता	वास्तविक गुणों और विश्वास को प्राथमिकता
८	किरण	३००+	१	वीडियो कॉल और मैसेंजर	केवल खाली समय की मित्रता
९	ज्योति	४८०+	२	सोशल मीडिया स्क्रॉलिंग	मनोरंजन और सतही जुड़ाव
१०	प्रीति	५५०+	०	रील बनाना और पोस्ट करना	फॉलोअर्स बढ़ाना (स्वार्थ भावना)
११	रितु	२९०+	२	केवल संदेशों का आदान-प्रदान	सामान्य परिचय मात्र
१२	दीपा	३३०+	१	गपशप और ग्रुप चैट	समय काटने का साधन
१३	काजल	७१०+	२	व्यावसायिक नेटवर्किंग	स्वार्थ और व्यावसायिक लाभ
१४	मेघा	४२०+	३	शैक्षिक चर्चा और नोट्स	साझा हित और सहयोग
१५	स्वाती	१९०+	२	पारिवारिक संपर्क बनाए रखना	सीमित एवं सुरक्षित बातचीत
१६	अलका	३८०+	१	मीम्स और चुटकुले साझा करना	केवल मनोरंजन आधारित संबंध
१७	कोमल	४६०+	०	ऑनलाइन ट्रेंड्स फॉलो करना	दिखावा और अस्थायी पहचान
१८	शालिनी	६२०+	२	फोटो फिल्टर और पोस्टिंग	सोशल स्टेटस और वाहवाही
१ १९	रश्मि	५००+	३	पुराने सहपाठियों से जुड़ना	सामान्य मित्रता संबंध
२०	निशा	३४०+	१	केवल रैंडम चैटिंग	सतही संवाद, संवेदनशीलता की कमी
२१	सुमन	२५०+	२	समाचार और सूचनाएं देखना	व्यावहारिक और सीमित संबंध
२२	ममता	३१०+	२	त्योहारों की शुभकामनाएं देना	केवल नाममात्र का परिचय
२३	कविता	४७०+	१	नए दोस्त बनाना	अस्थायी और क्षणभंगुर संबंध
२४	अनीता	५८०+	०	स्टेटस देखना और	दिखावे की होड़

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

				डालना	
२५	सुनीता	६९०+	३	कला और क्राफ्ट साझा करना	रचनात्मक सहयोग
२६	पिंकी	४००+	१	गेमिंग और लाइव चैट	मनोरंजन आधारित संबंध
२७	मोनिका	५२०+	२	दैनिक ब्लॉगिंग	फॉलोअर्स के साथ सतही जुड़ाव
२८	सोनम	३६०+	१	रील और संगीत सुनना	केवल समय बिताने का जरिया
२९	शीतल	२१०+	३	बहुत कम फोटो पोस्ट करना	वास्तविक और गहरी मित्रता पर भरोसा
३०	अन्नू	४४०+	०	सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसिंग	स्वार्थ और दिखावे की संस्कृति
३१	बबिता	२८०+	२	घरेलू नुस्खे साझा करना	घरेलू और सामान्य परिचय
३२	चंचल	६३०+	१	हर गतिविधि को लाइव करना	आत्म-प्रदर्शन की इच्छा
३३	गरिमा	५१०+	३	कॉलेज ग्रुप्स में सक्रियता	काम निकालने की मित्रता
३४	हिमांशी	३९०+	१	ऑनलाइन शॉपिंग और रिव्यू	उपभोक्तावादी दृष्टिकोण
३५	इन्दु	१६०+	२	निजी डायरी की तरह उपयोग	सीमित और चुनिंदा मित्र
३६	खुशबू	४५०+	१	ब्यूटी टिप्स साझा करना	बाहरी आकर्षण पर आधारित संबंध
३७	लता	२२०+	३	पुराने गानों की चर्चा	वैचारिक और गंभीर संवाद
३८	मंजू	५००+	२	धार्मिक सुविचार पोस्ट करना	आध्यात्मिक और सामान्य जुड़ाव
३९	निधि	६७०+	१	खुद को व्यस्त रखना	अकेलेपन को छिपाने का प्रयास
४०	पायल	३२०+	०	केवल दूसरों की प्रोफाइल देखना	ईर्ष्या और असंतोष (FOMO)
४१	राधा	१५०+	४	सोशल मीडिया से दूरी	हितोपदेश के अनुरूप सच्ची मित्रता
४२	साक्षी	७५०+	२	सेलिब्रिटी अपडेट देखना	काल्पनिक दुनिया में जीना

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

४३	तन्या	४८०+	१	चैट ऐप्स का प्रयोग	क्षणिक और सतही बातचीत
४४	उर्वशी	५४०+	०	Brand प्रवर्धन (प्रमोशन)	पूर्णतः व्यावसायिक स्वार्थ
४५	वर्षा	३००+	२	मौसम और यात्रा की तस्वीरें	सामान्य सामाजिक दिखावा
४६	यशिका	४९०+	१	हर समय ऑनलाइन रहना	डिजिटल निर्भरता और भ्रम
४७	अनन्या	६१०+	३	ज्ञानवर्धक बातें साझा करना	बौद्धिक और उपयोगी संबंध
४८	भावना	३७०+	२	कविताएं लिखना और पोस्ट करना	रचनात्मक अभिव्यक्ति का जरिया
४९	छवि	४३०+	१	प्रोफाइल पिक्चर बदलना	बाहरी रूप-रंग की तारीफ पाना
५०	दीपिका	७००+	२	बड़े ग्रुप्स का हिस्सा बनना	भीड़ में अकेलापन छिपाना

सारणी 1 में 50 छात्राओं की डिजिटल तथा वास्तविक मित्रता से संबंधित स्थिति का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्राओं के ऑनलाइन मित्रों की संख्या बहुत अधिक है, जबकि वास्तविक जीवन में उनके घनिष्ठ मित्रों की संख्या अत्यंत सीमित है। छात्राओं के ऑनलाइन मित्र लगभग 140 से 750 से अधिक के बीच हैं, परंतु वास्तविक मित्रों की संख्या केवल 0 से 4 के बीच पाई गई है। लगभग सभी छात्राओं के सैकड़ों ऑनलाइन मित्र होने के बावजूद कुछ छात्राओं ने एक भी वास्तविक मित्र नहीं बताया। इससे डिजिटल संपर्कों की अधिकता और वास्तविक सामाजिक संबंधों की कमी के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

सोशल मीडिया के उपयोग के उद्देश्यों में फोटो और स्टेटस साझा करना, रील बनाना एवं देखना, चैटिंग करना, वीडियो कॉल, गेमिंग, ब्लॉगिंग, ऑनलाइन नेटवर्किंग, शैक्षणिक सामग्री खोजना, पुराने मित्रों से संपर्क बनाए रखना तथा मनोरंजन प्रमुख हैं। कुछ छात्राएँ सोशल मीडिया का उपयोग ज्ञानवर्धक सामग्री, शैक्षिक चर्चा, कला, कविता और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी करती हैं। इसके विपरीत, कई छात्राओं का उपयोग अत्यधिक स्क्रॉलिंग, आत्म-प्रदर्शन, फॉलोअर्स बढ़ाने, दूसरों की प्रोफाइल देखने तथा हर गतिविधि को ऑनलाइन साझा करने तक सीमित है।

मित्रता के आधारों का विश्लेषण दर्शाता है कि अधिकांश डिजिटल संबंध मनोरंजन, समय बिताने, दिखावे, सामाजिक प्रतिष्ठा, स्वार्थ, व्यावसायिक लाभ अथवा क्षणिक बातचीत पर आधारित हैं। ऐसे संबंधों में विश्वास, संवेदनशीलता, भावनात्मक सहयोग और संकट के समय सहायता की कमी दिखाई देती है। कुछ छात्राओं ने ऑनलाइन मित्रता को सतही, अस्थायी, अविश्वसनीय तथा केवल नाममात्र का परिचय माना है। फॉलोअर्स बढ़ाने, प्रशंसा प्राप्त करने और स्वयं को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति भी डिजिटल मित्रता को प्रभावित करती दिखाई देती है।

दूसरी ओर, जिन छात्राओं की सोशल मीडिया पर सक्रियता अपेक्षाकृत कम है, वे वास्तविक मित्रता, विश्वास, साझा रुचियों, वैचारिक संवाद और भावनात्मक सहयोग को अधिक महत्त्व देती हैं। उदाहरण के लिए, राधा

के ऑनलाइन मित्र केवल 150 से अधिक हैं, जबकि उसके चार वास्तविक मित्र हैं। इसी प्रकार स्नेहा, शीतल और लता के ऑनलाइन मित्र अपेक्षाकृत कम हैं, परंतु उनके तीन-तीन वास्तविक मित्र हैं। इन छात्राओं ने सच्ची, गहरी, गंभीर और विश्वासपूर्ण मित्रता को प्राथमिकता दी है।

समग्र रूप से सारणी से यह निष्कर्ष निकलता है कि ऑनलाइन मित्रों की बड़ी संख्या वास्तविक एवं विश्वसनीय मित्रता का प्रमाण नहीं है। सोशल मीडिया ने संपर्क और संवाद के अवसर अवश्य बढ़ाए हैं, लेकिन इससे बने अधिकांश संबंध सतही, सुविधा-आधारित और अल्पकालिक हैं। वास्तविक मित्रता की पहचान मित्रों की संख्या से नहीं, बल्कि पारस्परिक विश्वास, सहयोग, संवेदनशीलता, भावनात्मक निकटता और संकट के समय साथ देने से होती है। अतः डिजिटल युग में छात्राओं के लिए ऑनलाइन संपर्कों और वास्तविक मानवीय संबंधों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

निष्कर्ष

हितोपदेश के श्लोक आज भी सच्चे मित्र के मार्गदर्शन के लिए सिद्ध हो सकते हैं। निष्कर्ष यह है कि हितोपदेश आज के समय की मित्रता के लिए उतना ही आवश्यक है जितना उस समय में था। आज जहाँ ऑनलाइन मित्रता ने मित्रता में बदलाव किया है वहीं हितोपदेश उस संबंध को पुनर्स्थापित करने की कोशिश की है। सच्चा मित्र वही होता है जो स्वार्थरहित, सत्यनिष्ठ और मुसीबत के समय अपने मित्र की सहायता करे। यदि आज के युवा इन शिक्षाओं को अपनाएं तो ऑनलाइन मित्रता भी अच्छी तरह से निभाई जा सकती है। यह शोध-पत्र तकनीक का विरोध नहीं करता, बल्कि उसके उपयोग के पीछे एक सुदृढ़ नैतिक चेतना जगाने का आग्रह करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. नारायण पंडित। हितोपदेश। हिंदी अनुवाद: पंडित रामेश्वर भट्ट; सम्पादक: नारायण राम आचार्य 'काव्यतीर्थ'। नई दिल्ली: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।
2. नारायण पंडित। हितोपदेश—मित्रलाभ। नई दिल्ली: राजपाल एंड सन्स।
3. सुब्रह्मण्यम, कावेरी एवं ग्रीनफील्ड, पैट्रिशिया। "ऑनलाइन संचार और किशोरों के पारस्परिक संबंध।" द फ्यूचर ऑफ चिल्ड्रन, खंड 18, अंक 1, 2008, पृष्ठ 119–146।
4. बॉयड, डानाह। इट्स कॉम्प्लिकेटेड: द सोशल लाइव्स ऑफ नेटवर्क्ड टीन्स। न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2014।
5. लेनहार्ट, अमांडा; स्मिथ, आरोन; एंडरसन, मोनिका; डुगन, मेव एवं पेरिन, एंड्रयू। टीन्स, टेक्नोलॉजी एंड फ्रेंडशिप्स। वाशिंगटन डी.सी.: प्यू रिसर्च सेंटर, 2015। स्रोत
6. टर्कल, शेरी। अलोन टुगेदर: व्हाई वी एक्सपेक्ट मोर फ्रॉम टेक्नोलॉजी एंड लेस फ्रॉम ईच अदर। न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स, 2011।
7. शर्मा, विष्णु। पंचतंत्र। नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी।
8. प्राउलक्स, मिशेल एवं अन्य। "फ्रेंड्स, फॉलोअर्स, पीयर्स एंड पोस्ट्स: किशोरों के प्रत्यक्ष एवं ऑनलाइन मित्रता-संजाल और मित्रता की निकटता पर सोशल मीडिया का प्रभाव।" फ्रंटियर्स इन डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 2024। शोध आलेख